बस एक ही रास्ता !

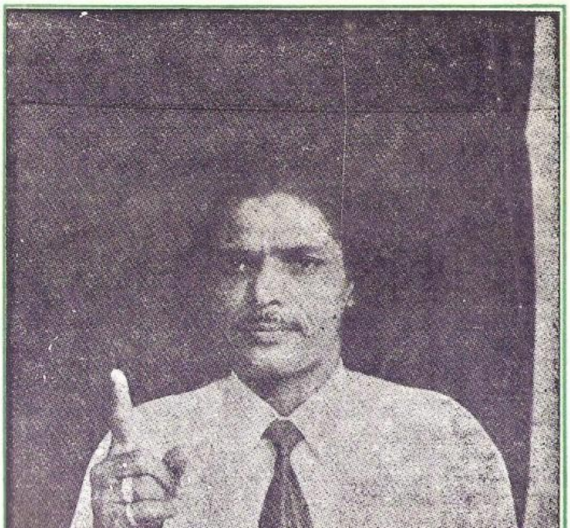

-- मोहम्मद शौकत अली

बस एक ही रास्ता !

अल्लाह ईश्वर अगर हर जगह मौजूद है तो यक़ीन मानिए कि वह ज़ात, मन्दिरो, मस्जिदों, गिरिजाघरों और गुरुद्वारों में भी हैं, आप में भी और मुझमें भी । कोई सिर्फ मस्जिद में, कोई सिर्फ मन्दिर में अगर उसे देख रहा है तो यह देखने वाले का भ्रम है, क्योंकि जो सभी जगह है वह सिर्फ एक जगह नहीं हो सकता है और जो सिर्फ एक जगह है वह सभी जगह कैसे हो सकता है ।

- मोहम्मद शौकत अली

बस एक ही रास्ता !

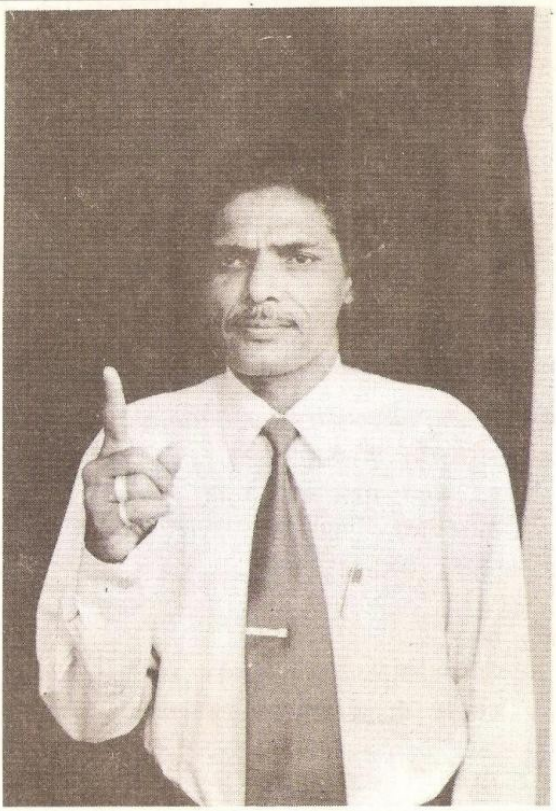

मोहम्मद शौकत अली

बाबा तस्वीर शाह, बाबा बेदारशाह
एवं
स्व. पिता जनाब कमालउद्दीन साहब
के चरणों में समर्पित ।

''जब से सुना है यार लिबासे बशर मे है
अब आदमी कुछ और हमारी नज़र में हैं ।''

हज़रत बेदमशाह

- लेखक एवम् प्रकाशक :
  मोहम्मद शौकत अली
  63, मदन मोहन बर्मन स्ट्रीट
  कोलकाता - 700007
  फोन : 033-2219 0671

- प्रिंटर्स :
  जहान आर्ट प्रेस
  एक न० श्रीनाथ बाबू लेन, कोलकाता - ७३

- मार्च दो हजार चार
  तादाद - एक हजार
  सहयोगराशि - दस रूपये मात्र

दो शब्द

प्रिय सज्जनों,

कई वर्षो तक इस पुस्तिका की हस्तलिखित पाण्डुलिपि प्रेस में पड़ी रही, छपकर आप तक नहीं पहुँच सकी क्योंकि सच लिखना, छापना और ग्रहण करना जिगर वालों का काम है । खुशी है कि आज यह आपके महान करकमलों में है । मैं जानता हूँ कि आप में से कुछ सज्जनों को मेरे इन विचारों से काफी चोट पहुँचेगी और ज्यादहतर लोगों को तो ऐसा लगने लगेगा जैसे ये विचार मेरे नहीं बल्कि उनके अपने हैं, अपनी टीस, प्रसन्नता, सहमती, असहमति और सलाह अगर लिख भेजने की कृपा करें तो बड़ी आभारी रहूँगा । मेरा मकसद किसी सज्जन के विश्वासों को ठेस पहुँचाना नहीं बल्कि उसमें क्रान्ति लाना है । अंधविश्वामों के विध्वंश के बिना निर्माण संभव नहीं । इसलिए मिट जाने दीजिए उन विश्वासों को जो इन्सान, इन्सानियत और देशहित में बाधक है । अगर मेरी यह पुस्तिका जनहित और देशहित में हो तो भारत के हर घर तक इसे पहुँचाने में आपकी सलाह-सहयोग का आकांक्षी हूँ ।

मोहम्मद शौकतअली

जनाब आलमगीर वारसी, सगीर अहमद वारसी, पंडित मकसूद हुसैन वारसी, वीरू बौद्ध, अब्दुल खालिक अंसारी, शाहिद अख्तर, जैनुल आबदीन, सुजाता जयसवाल, रवि अरोड़ा, तूफैल अहमद, मो. शकील, मो. जावेद, कबिरदास, जी-भरत, उमेश बौद्ध, रामसकल राम, डॉ. ए. हसन, आलोक हाजरा, राम सुरेश शर्मा, बीजन हाजरा, हसीना बेगम, सकीना बेगम, रौशन आरा बेगम, राहत सुल्ताना, कमाल अंसारी, आलम, भोलू एकराम, टिंकू, पप्पू, शाहनवाज आलम, मुन्ना इकबाल, सेराज, डॉ. टूनी, जीतेन्द्र सिंह, शशिकुमार, उमेश पासवान (पार्षद), कपिलदेव यादव, अरविन्द कुमार सिंह, व्रिदा यादव, राजकुमार सिंह (डी.एस.पी.) शिवपूजन प्रशांत, अली इमाम, भारती, हरेन्द्र प्रसाद, मंगल सिंह, मनोज कुमार सिंह, अयूब वारसी, रयाजउदीन, विश्वजीत राय, मोहम्मद अली, मो. ग्यासउद्दीन, सरफराज़, राजेश्वर यादव, मालादास, मो. परवेज, राधा सिंह, श्री शिव बोध राम, पंकज उदास, श्री बी. राम, मो. इम्तीयाज, पप्पु यादव, ज्याउद्दीन अंसारी, तपेन्द्र कुमार सिन्हा, इसराईल अंसारी, सरजुग पासवान, डॉ. एन. के. सिंह, डॉ. आर. पी. सिंह, डी. के. राय, राम यतन प्रसाद, गौतम सिंह, अब्दुल सतार अन्सारी, मोहम्मद इकबाल, अयुब खान (एडवोकेट), युनूस (एडवोकेट), रेशमा इब्राहिम तथा संघर्ष के अन्य साथियों के सहयोग का आभारी हूँ ।

- मोहम्मद शौकत अली

हिटलर ने अपने जमाने में यहुदियों का बेतहाशा खून बहाया था, उन्हें मिटा देने की पूरी कोशिश की थी, शायद ये सोचकर कि यहूदी नस्ल ही मिट जाएगी दुनिया से । हिटलर मिट गया, हिटलरशाही मिट गयी, लेकिन यहूदी आज भी जिन्दा हैं करोड़ो की तादाद में जर्मनी रूस, इसराईल और अमेरिका में ही नहीं बल्कि पूरी दुनिया में । अगर ये कहा जाय कि यहूदी आज पहले से ज्यादह ताकतवर हो गये हैं तो शायद गलती नहीं होगी । अमेरिका ने जापान पर एटम बम गिरा दिया था शायद ये सोचकर कि जापान तबाह-बर्बाद हो जाएगा, मिट जाएगा लेकिन जापान मिटा नहीं बल्कि आज पहले से ज्यादह शक्तिशाली होकर सामने खड़ा है । अगर आप आज जापान का दौरा करें तो आपको ये जानकर ताज्जुब होगा कि जापान दुनिया के कई देशों से सैंकड़ो साल आगे है ।

यज़ीद बिन माविया बिन अबु सुफियान ने कर्बला के मैदान में हजरत मोहम्मद स. अ. ब. के खानदान को मिटा देने की पूरी कोशिश की, बच्चों को भी नहीं छोड़ा, शहीद कर दिया, शायद ये सोचकर कि हज़रत मोहम्मद स.अ.व., हज़रत अली क. ब. हज़रत फातमा जोहरा स.अ.और हजरत इमाम हसन-हुसैन अ. स. का कोई नाम लेवा न रहे, लेकिन आज कड़ोड़ो की संख्या में हज़रत मोहम्मद स. अ. व. और आपके, आल, औलाद का नाम लेने वालें मोहम्मदी-मुसलमान मौजूद हैं पूरी दुनिया में । क्या यज़ीद का मंशा कामयाब हुआ ?

कहने का तात्पर्य है कि कोई राष्ट्र, सरकार अथवा किसी खास जाति, सम्प्रदाय और धर्म-मजहब के मानने वाले अगर दूसरे धर्म, जाति या सम्प्रदाय के माननेवाले को सत्ता या शक्ति के बल पर मिटा देना चाहते हैं तो यकीन जानिए न तो यह उचित ही है और न संभव ही।

भारत के प्राचीन इतिहास पर अगर हम नजर डालें तो मालूम होता है कि शासकों, सियासतदानों और धर्म के नकली ठीकेदारों ने अपने हित के लिए इन्सानों को कई वर्णो में बांट दिया । फिर भी संतोष नहीं हुआ तो जातियाँ और उपजातियाँ बनाई और इन्सानियत को टुकड़े-टुकड़े में बाँट दिया, क्योंकि उन्हें इन्सानी एकता से भय था। हर आदमी अपनी मां के पेट से पैदा होता है लेकिन इन्सानों को यह समझाया गया कि कोई ब्रह्मा जी के सर से पैदा हुआ, कोई भुजा से,

कोई उदर से तो कोई पैर से । दुनिया का कोई बड़ा से बड़ा डाक्टर साबित नहीं कर सकता कि ऐसा हो सकता है । मैंने आजतक कोई ऐसा इन्सान नहीं देखा जो अपनी माँ के पेट से पैदा नहीं हुआ हो । क्या आप किसी ऐसे इन्सान को जानते हैं ? अगर कोई ऐसा इन्सान पृथ्वी पर है तो मैं उनसे मिलना चाहूँगा । कुछ लोगों का यह भी विश्वास है कि कुछ लोग सिर्फ माँ से ही पैदा हो गये हैं । अर्थात बिना बाप के पैदा हो गये । कहा जाता है कि किसी देवता या फरिश्ता ने फूंक मार दी तो गर्भ रह गया । क्या ऐसा संभव है ? जरा विचार कीजिए । अगर ऐसा संभव है तो उस देवता या फरिश्ता की ये बड़ी नादानी है क्योंकि उसके फूंक में जब इतनी शक्ति है तो फिर बिना माँ के ही बच्चा पैदा कर देना चाहिए था क्योंकिं बेचारी माँ को नौ महीने तक कष्ट सहने की और जन्म देने के समय इतनी तकलीफ झेलने की क्या जरूरत थी ? हक़ीकत तो यह है कि कुदरत की सृष्टि में आदम (आदमी) सबसे उत्तम है तभी तो फरिश्तों ने आदम का सजदा किया और आज भी कर रहे हैं । बाबा आदम और माँ हव्वा से ही आज भी आदम (नर) और हव्वा (नारि) की पैदाइश का सिलसिला जारी है । किसी फरिश्ता में यह शक्ति नही ।

इस देश पर हजारों साल तक बौद्ध राजाओं का शासन था। उस समय इस देश को सोने की चिड़िया कहा जाता था क्योंकि लोग बहुत ही खुशहाल और अमन चैन से थे । पुश्यमित्र सुंग नाम के एक बाहरी व्यक्ति ने छल से इस देश के धरतीपुत्र बौद्ध राजा वृहदरथ का खून करके शासन पर कब्जा कर लिया। उसने लाखों बौद्धो का कत्ल कराया और कातिलों को दोनों हाथों से इनाम बांटा । यानि बौद्धो को इस देश की सरज़मीन से मिटा देने की पूरी कोशिश की, लेकिन क्या उन्हें मिटा सके ? आज भी कड़ोड़ो की संख्या में बौद्ध धर्म के मानने वाले मौजूद हैं इस देश में । अब तो वे अपनी पार्टी भी चला रहे है और बहुत ही कम दिनों में ही वह पार्टी राष्ट्रीय पार्टी भी बन चुकी है। वे बौद्ध आज पुनः इस देश का राजा होने की कोशिश में लगे हैं ।

तथाकथित शुद्रों और तथाकथित अछूतों को मिटा देने की कम कोशिश नहीं हुई इस देश में । प्राचीन इतिहास गवाह है कि एक शूद्र न तो पढ़ सकता था, न पढ़ा सकता था, न वाण-विद्या सीख सकता

था क्योंकि उस समय उन्हें ये अधिकार नहीं था । उनका कर्तव्य मात्र उच्च वर्णों के लोगो की सेवा करना था । महाभारत के जमाने में गुरु द्रोणाचार्य ने एकलव्य नामक व्यक्ति को वाण विद्या नहीं सिखाया, क्योंकि वह शूद्र था । जब एकलव्य ने द्रोणाचार्य को गुरु मानकर खुद वाण-विद्या सीख लिया तो साजिश के तहत उनका दाहिना अंगूठा दान में ले लिया गया ताकि रणक्षेत्र में वे वाण न चला सकें ।

राजा श्री रामचन्द्र जी के जमाने में शम्बुक नाम के शूद्र (जाति के तेली) अध्ययन, अध्यापन और तप करने लगे तो जैसा कि कहा जाता है उनका सर क़लम करा दिया गया कि क्योंकि उस समय शूद्रो को ये अधिकार नहीं था । इतिहास साक्षी है कि हजारों साल पहले तथाकथित शूद्रो के गले में हांडी, कमर में झाड़ू और हाथ में घंटी बंधा होता था । वे उसी हांडी में थूकते थे क्योंकि ज़मीन पर थूकने से जमीन नापाक हो जाती थी । झाड़ू इसलिए बंधा होता था कि जब शूद्र रास्ता चलते तो उनके पैरों के निशान मिटते चले जाते थे ताकि किसी सवर्ण का पैर उस निशान पर न पड़ सके नहीं तो अशुभ होता था । उनके हाथो में घंटी इसलिए बंधी होती थी कि जब वे रास्ता चलते तो घंटी बजाते चलते ताकि उच्च वर्णों के लोग सावधान हो सके नहीं तो शूद्रों की परछाई से वे अपवित्र हो जाते थे । एक शूद्र अगर कोई धर्मग्रंथ पढ़ लेता तो उसके जुबान काट देने का और अगर सुनता तो उनके कानों में रांगा पिघला देने की व्यवस्था थी । चाहें जिस किसी राजनेता या धार्मिक नेता ने ऐसी व्यवस्था बनायी हो लेकिन यह इन्सानों को बांटने की साजिश नहीं तो और क्या है। कूदरत ने आदमी को सिर्फ आदमी पैदा किया । किसी के पीठ पर मुहर नहीं है कि यह उच्चवर्ग का है वह निम्नवर्ग का, यह हिन्दु है, वह मुसलमान है, यह सिख है, वह जैन, बौद्ध पारसी । कुदरत ने यह भी मुहर नहीं लगाया कि यह डफाली है, वह अन्सारी, यह शेख है, वह पठान । कुदरत ने तो देश की सीमाओं को भी नहीं बांटा । यह सब हमने खुद किया है । स्वार्थी शासकों, धार्मिक नेताओं ने इन्सानों को जाति, धर्म और देश - प्रदेश की सीमाओं में बाँध कर इन्सानियत को टुकड़े - टुकड़े कर दिया सिर्फ अपने स्वार्थ के लिए ।

जरा विचार कीजिए कि आखिर तथाकथित अछूतों और शूद्रों को अध्यन, अध्यापन से क्यों रोका गया ? इसलिए न कि वे अज्ञानी

और अनपढ़ रहें ताकि उनकी सेवा करते रहें । एक ग्रंथ में लिखा है - ''ढोल गवाँर शूद्र पशु नारी, ये सब ताजन के अधिकारी।'' औरत और तथाकथित शूद्र सभी इन्सान हैं फिर उनके बारे में ऐसी अपमानजनक बाते क्यों लिखी गयी ? व्यवहार में भी उनके साथ वैसा सलुक क्यों किया गया और आज भी किया जा रहा है ? अगर माँ हव्वा - सतरूपा न होतीं तो न हम होते न आप। हजरत मरियम न होतीं तो हज़रत ईसा अ.स. का जन्म न होता । माँ देवकी और माँ कौशल्या न होती तो श्रीकृष्ण और श्रीरामचन्द्र जी का जन्म न होता । माँ हज़रत आमना र. अ. न होतीं तो हजरत मोहमम्द स. अ. व. का जन्म न होता। जितने भी सच्चे इन्सान, नबी, दूत और पैग़म्बर आऐ इस पृथ्वी पर वे सभी अपनी माँ के पेट से पैदा हुए । फिर हमारी माँ बहनों के बारे में ऐसी अपमानजनक बातें क्यों लिखी गयी किताबों में । आपने कभी विचार किया इन प्रश्नों पर ? जरा विचार कीजिए कि वे कौन लोग थे जिन्होंने इन्सानों को अछूत और शूद्र का दर्जा दिया और माँ बहनों के बारे में ऐसी अभद्र बातें लिखी । एक ग्रंथ में आया है -''विप्र पूजीय शील गुण हीना, शूद्र न गुण गण ज्ञान प्रवीणा'' । तात्पर्य है कि शूद्र अगर सभी गुणो से सम्पूर्ण हों तब भी पुज्य नहीं लेकिन जाति का ब्राह्मण अगर अज्ञानी और गुणहीन हो तब भी पूजनीय और आदरणीय है । यह शासक और पुरोहित समाज की साजिश नहीं तो और क्या है ? सभी इन्सान बराबर है फिर जाति और धर्म के आधार पर ऊँच - नीच का भेद - भाव क्यों ? मेरी नज़रों में आदमी सिर्फ आदमी है । न कोई ब्राह्मण है, न शूद्र, न हरिजन, न डफाली, न शेख, न पठान। कुदरत ने हमें इन्सान पैदा किया । बस इन्सान । आदरणीय और पूजनीय वे है जो सच्चे है, ज्ञानी हैं, मानवतावादी हैं, त्यागी हैं चाहे वे जिस किसी जाति या धर्म के मानने वाले मां-बाप के घर में पैदा हुए हों । किसी कुल में पैदा होने से इन्सान छोटा - बड़ा नहीं होता। इन्सान आदरणीय होता है ज्ञान, गुण, अमल और अपने चरित्र से । इतनी कोशिशो के बावजूद क्या तथाकथित उच्चवर्णों के लोग तथाकथित शूद्रो और अछूतों को मिटा सके ?

उन्हें मिटाने की कोशिशों का प्रतिफल यह हुआ कि जब यह देश आज़ाद हुआ तो उन शूद्रों और अछूतों के लिए भारत के संविधान में

विशेष व्यवस्था करना पड़ा । संसद, विधानसभाओं और सरकारी नौकरियों में उनके लिए सीटे आरक्षित करनी पड़ी। जिनके गले में हांडी और कमर में झाड़ू हुआ करते थे श्रद्धेय डॉ० भीमराव अंबेदकर के अथक प्रयासों और कुरबानियों से आज वहीं टाई और रिवालवर दिखाई पड़ रहा है । 1952 से लेकर आज तक जितने भी चुनाव हुए हैं तथाकथित शूद्र और अछूत दो सौ से तीन सौ की संख्या में जीतकर आते हैं भारत की संसद में । आज केन्द्र और प्रदेशों में सरकारें चला रहे हैं वे । राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति, मुख्यमंत्री, लोकसभा अध्यक्ष, एस. पी., कलेक्टर और थानेदार हो रहे हैं वे । डॉ० अंबेडकर ने अन्य पिछड़े वर्गो के लिए भी संविधान में अनुच्छेद 340 की व्यवस्था कर दी थी । जनाब विश्वनाथ प्रताप सिंह ने अपने जमाने में लालूजी, मुलायम सिंहजी, शरद यादवजी जैसे ओ. बी. सी. लीडरो के दबाव में आकर सरकारी नौकरियों में 27% सीटे ओ. बी. सी. उम्मीदवारों के लिए आरक्षित कर दी । सवर्ण हिन्दु भाइयों ने इस आरक्षण के विरुद्ध आन्दोलन चलाया, उन्हें आरक्षण न मिले इसकी पूरी कोशिश की, लेकिन वे अपने मीशन में सफल नहीं हुए ।

ओ. बी. सी. के लिए आरक्षण की जो व्यवस्था वी. पी. सिंह जी ने की, वह व्यवस्था तो नेहरू जी और इन्दिरा जी के जमाने में ही किया जाना चाहिए था । मेरे ख्याल में उस समय यह व्यवस्था इसलिए लागू नहीं की गयी क्योंकि नेहरू जी और इन्दिरा जी की सरकारों की नीयत साफ नहीं थी । ये जानकर आपको ताज्जूब होगा कि 35% फीसद ओ. बी. सी (हिन्दु भाई) आबादी को अबतक तकरीबन सिर्फ चार से पाँच फीसद सरकारी नौकरियां मिली हैं । क्या यह उचित है ? बंगाल तथा अन्य कई प्रांतो में अभी भी 27% आरक्षण पूरी तरह लागू नहीं किया जा सका है । तरह - तरह के बहाने बनाए जा रहे हैं । कई प्रांतो में तो जाति प्रमाण-पत्र बनवाने में कई साल लग जाते हैं । शासन में बैठे वर्तमान द्रोणाचार्यों की नीयत आज भी साफ नहीं है । एस. सी., एस. टी. समाज के लिए संविधान में 22 $^1/_2$% साढ़े बाईस फीसद आरक्षण की व्यवस्था है, लेकिन पचास वर्षों में अबतक सरकारी नौकरियों में उन्हें आठ से दस फीसद प्रतिनिधित्व मिला है । बाकी सीटों पर अब भी शासक समाज के लोग बैठे हैं । आज़ादी के समय मुसलमान तकरीबन 33% से 35% तैतीस से पैंतीस

फीसद सरकारी नौकरियों में थे, लेकिन आज पचास वर्षो के दौरान सरकारी नौकरियो में उनका प्रतिनिधित्व घटकर एक फीसद और आधा फीसद के करीब हो गया है ।

अन्य अल्पसंख्यक समुदाय का भी कमो-बेश यही हाल है। अपनी ही सरकारों में बैठे लोगों की नीति और नीयत साफ नहीं रहने के कारण ही तो ऐसा हुआ ।

परिस्थितिवश एस. सी., एस. टी., ओ. बी. सी. समाज में कुछ ऐसे नेता पैदा हो रहे है जो यह कहने लगे है कि चुँकि एस.सी., एस. टी., ओ. बी. सी., और अन्य कमजोर वर्गों के वोट करीब 90% नब्बे फीसद है इसलिए प्रधानमंत्री, मुख्यमंत्री उनके समाज का होना चाहिए । उनका ये कथन सत्य प्रतीत होता है ।

आगामी बीस-तीस वर्षो में द्रोणाचार्यों का छल प्रपंच शायद कोई काम नहीं आएगा और उनका देश का प्रधानमंत्री और प्रांतो का मुख्यमंत्री होना शायद असंभव हो जाएगा ।

मेरे ख्याल में अगर एस. सी., एस. टी. समाज के लिए संसद और विधानसभाओं की सीटे आरक्षित नहीं होती तो शासक समाज के लोग उन्हें उसी तरह जीतकर संसद और विधानसभाओं में आने नहीं देते जैसे मुस्लिम तथा अन्य अल्पसंख्यक समाज के लोगों को जीतकर नहीं आने देते हैं । शासक समाज की पार्टियों में मौजूद एस. सी, एस. टी. और मुस्लिम तथा अन्य अल्पसंख्यक समाज के सांसद और विधायक अपने-अपने समाज के हक-हिस्से के लिए आन्दोलन नहीं कर पाते क्योंकि वहाँ वे विवश, लाचार और पार्टी टिकट के लिए मुहताज होते हैं । उनकी हैसियत उन पार्टियों में चमचे जैसी होती है, लेकिन रहनुमा की तरह दिखाई पड़ते है । ये चमचे अपने समाज के वोटो से सांसद, विधायक और मंत्री तो बन जाते है लेकिन अपने समाज के हित के लिए काम नहीं करते, बल्कि अपने - अपने मालिकों के हित के लिए काम करते हैं । कहा जा सकता है कि ऐसे सांसद और विधायक अपने - अपने आक़ाओं के वफ़ादार और अपने समाज के लिए बेवफा होते है । दलित, पिछड़े अक़लियत समाज के लोगों को चाहिए कि ऐसे चमचों को संसद और विधानसभाओं में न पहुँचने दे । संसद और विधानसभाओं में ऐसे लोगों को चुनकर भेजें जो उनका सच्चा रहनुमा हो जो उनके हित के लिए तथा शांति, इन्सानी एकता और देश हित के लिए काम कर सकें ।

सिखों, ईसाइयों और दूसरे अल्पसंख्यक समाज के लोगों को भारत की सरज़मीन से मिटा देने की कम कोशिशे नहीं हुई इस मुल्क में । उड़ीसा में एक समाज सेवी ईसाई को उनके बच्चे सहित ज़िन्दा जला दिया गया । गुजरात में अभी फिलहाल श्री नरेन्द्र मोदीजी की सरकार में मुसलमानों के साथ जो सलूक किया गया वो किसी से छुपा नहीं है । इतिहास साक्षी है कि जब कभी इस देश पर आक्रमण हुआ तो देश भक्त सिखों और मुसलमानों ने अपने जान की बाजी लगा दी । हसन खां मेवाती ने बाबर से जंग लड़ी । स्व. चन्द्रशेखर, भगत सिंह, अश्फाकुल्लाह खान, शेख घसीटा और छोटेलाल यादव जैसे हज़ारों सपूतों को फांसी लगी । हैदर अली और टीपू सुल्तान जैसे हज़ारों लोगों ने अंग्रेजो से लड़ते हुए जामे शहादत नोश की । सिख, ईसाई, हिन्दु, मुस्लिम सभी ने साथ मिलकर खून बहाया और देश को आज़ाद कराया लेकिन जब देश आज़ाद हुआ तो नेहरुजी ने देश की सत्ता हथिया ली । डॉ. अंबेडकरजी, श्री जगजीवन रामजी, मौलाना आजाद, सरदार पटेल जैसे लोगों के साथ धोखा हुआ । नेहरू जी की सरकार में बैठकर जनाब आज़ाद, जगजीवन बाबू, जैसे लोग अपने समाज के जानो माल, इज्ज़त, आबरू की रक्षा नहीं कर सके क्योंकि वे वहां विवश-लाचार थे । नेहरूजी जैसे द्रोणाचार्य ने अपने और अपने समाज के हित के लिए गाँधी जी की इच्छा के विरुद्ध देश के दो टुकड़े हो जाने दिया । उस समय मोहम्मद अली जिन्ना कांग्रेस में थे । 1906 में जब मुस्लिम लीग बनी तो वे उसमें नहीं गये क्योंकि उसे वे साम्प्रदायिक संगठन समझते थे । मजबूरन 1939-40 मे जाकर मिस्टर जिन्ना ने लाहौर कांफ्रेस में पाकिस्तान की मांग की क्योंकि नेहरूजी और उनके चमचों ने जिन्ना को ऐसा करने को विवश कर दिया । गाँधी जी के मर्ज़ी के खिलाफ नेहरूजी और उनकी कांग्रेस ने देश के बटवारे के प्रस्ताव पर स्वीकृति की मुहर लगा दी । यह बंटवारा देश और देशवासियों के हित में नहीं था । अगर राष्ट्रपिता गाँधीजी की बात नेहरूजी ने मान लिया होता तो आज विशाल अखंड भारत होता । अगर मैं यह कहूँ कि नेहरूजी और उनके लोगों ने अपने और अपने समाज के हित के लिए देश के दो टुकड़े हो जाने दिया और मोहम्मद अली जिन्ना और साथियों को पाकिस्तान की मांग करने के लिए विवश कर दिया तो शायद गलती नहीं होगी ।

मिस्टर जिन्ना ने भी अपने राजनैतिक स्वार्थ के लिए पाकिस्तान की मांग की। देश के बंटवारे से मुसलमानों को भारी नुकसान हुआ। जब तीस करोड़ मुसलमान आज शांति से भारत में रह सकते है तो उस समय क्यों नहीं रह सकते थे ? धार्मिक आधार पर बंटवारा जरुरी था तो फिर पाकिस्तान क्यों टूटा ?

1920 से पहले हिन्दु मुस्लिम सभी एक थे। कोई साम्प्रदायिक तनाव नहीं था। लेकिन सत्ता के लिए नेहरूजी और जिन्ना की बढ़ती दुरियों ने दोनो सम्प्रदाय के दिलो - दिमाग में एक दूसरे के ख़िलाफ नफ़रत पैदा कर दी। धीरे - धीरे दूरियाँ इतनी बढ़ गयी कि दंगे शुरु हो गये। अंग्रेज चाहते ही थे, इसलिए उन्होंने हवा दी। 1946 के दंगे में लाखों भाई, बहन मारे गये और अरबों खरबों की सम्पत्ति बर्बाद हुई। उस समय नेहरूजी की अन्तरिम सरकार चल रही थी। हिन्दुमहासभा और मुस्लिमलीग की बुनियाद पड़ चुकी थी। इसलिए नक़ली हिन्दु और नक़ली मुसलमानों ने आग में घी डालने का काम किया। उस समय कांग्रेस का चरित्र आज के विश्व हिन्दु परिषद, बजरंगदल से ज्यादा भिन्न नहीं था। क्योंकि गाँधी जी की बातों का कांग्रेस ने अनसुना करना शुरू कर दिया था। तभी तो गाँधी जी ने अपने एक सहपाठी से कहा था - ''हरकोई मेरी मुर्ति (फोटो) पर माला देना चाहता है लेकिन कोई मेरी बात नहीं सुनता, मैं देश का बंटवारा देखने के लिए ज़िन्दा नहीं रहूँगा।'' नेहरू जी की कांग्रेस उस समय वही काम करने लगी थी जो आज विश्व हिन्दुपरिषद जैसे संगठनों के लोग कर रहे हैं। इसीलिए हिन्दुमहासभा और आर. एस. एस. जैसे संगठनों को फलने फूलने में काफी समय लग गया। कांग्रेस की सरकार चलती रही और देश जलता रहा। अब तक लाखो दंगे हो चुके है इस देश में चाहे वो हिन्दु-मुस्लिम, हिन्दु-सिख दंगे हो या हिन्दु दलित, लेकिन ये दंगे किसी भी सरकार में रूक नहीं पाये। नेहरू जी, इन्दिराजी, राजीवजी, नरसिंहमारावजी और बाजपेयीजी जैसे लोगों की सरकारें इसे रोक नहीं पायी। मुस्लिम, सिख, एस. सी., एस. टी, ओ. बी. सी. और दूसरे गरीब और कमजोर समाज के लोग नियोजित तरीके से मारे जाते रहे, उनकी सम्पतियाँ लूटी और जलाई जाती रहीं लेकिन सरकारों मे बैठे लोग दंगाइयों को बचाने में

लगे रहे और उपर - उपर तबाह-बर्वाद होने वालो के लिए घड़ियाली आंसू भी बहाते है । अगर हमारी सरकारें चाहती तो दंगाईयो को ऐसा सबक सिखाती कि फिर कभी दंगे नहीं होते । लेकिन हमारी सरकारों ने ऐसा नहीं किया। इसलिए आज भारत का हर घर किसी न किसी रूप से दंगे की चपेट में है । एक ही समाज और विचार धारा के लोग कुछ सरकारों में बैठकर तो कुछ सरकारों से बाहर रहकर नियोजित ढंग से ये दंगे कराते रहे और उस धधकती आग में अपनी - अपनी सियासत की रोटियाँ सेकते रहें ।

सिखों का भी कम खून नहीं बहाया गया इस मुल्क में, औरंगज़ेब ने अपने जमाने में देश के महान संत गुरुतेग बहादुर और गुरूगोबिन्द सिंह के बच्चों का खून कराया । संत दारा शिकोह और फकीर शाह सरमद को काफिर का फतवा लगवाकर जन्नत की बड़ी-बड़ी आखों वाली हूरों की लालच में कत्ल कराया और मोहम्मदीं शरियत के मुताबिक दोज़ख खरीद ली । बाबरी मस्जिद की तरह सिखों के गोल्डन टेम्पल पर हमला कराकर हजारो सिखों का खून बहाया गया।

मरहूमा इन्दिराजी के खून के बाद १९८४ में सिर्फ दिल्ली में ही पाँच हजार सिख मारे गये। सरकारी आंकड़े ३७३३ बताते हैं । लेकिन गैर सरकारी सूत्रों का कहना है कि दस हजार से ज्याद बहनो की सेज और माताओं की गोद सूनी कर दी दंगाइयो ने । हमारी अपनी सेना ने गोल्डन टेम्पल को गोलियों से छलनी - छलनी कर दिया । हजारो सिखों को दंगाईयों ने अपनी दाढ़ी, बाल कटवाने को विवश कर दिया ।

आज भारत के सारे सिख, मुसलमान, इसाई शायद आतंकवादी है उनकी नज़रों में । शायद वे भूल गये चन्द्रशेखर अज़ाद, भगत सिंह, गुरुगोविन्द सिंह, हसन खां मेवाती और हकीम सूरी की कुर्बानियाँ । उनके ही समाज के लोग आज देश द्रोही और आतंकवादी साबित किये जा रहे । क्या आप विचार नहीं करेगे इन सच्चाइयों पर ? अगर आप इन्सान की हैसियत से विचार करगें इन तथ्यों पर तो आप मुझ से सहमत हो जाऐगें कि नियोजित ढंग से दंगे कराए जाते रहे, कुर्सी के खातिर, वोट के खातिर । भारत की सिकुलर वर्दी और गाँधी जी

की खादी पहनकर भी शासक समाज के मुट्ठीभर लोग भारत के संविधान के साथ अगर मज़ाक कर रहें हैं, देश से सिकुलरिज़म और मानवतावाद को मिटा देना चाहते हैं तो क्या आप खामोश तमाशायी बने रहेंगे ? अंग्रेजो के ज़माने में भी इन्सानो के साथ ऐसी घटनाएं नहीं घटी थीं जैसा की अपनी सरकारों में घट रही हैं । फिर यह कैसे मान लिया जाय कि सरकारों में बैठे लोग सिकुलर हैं ? नेहरू जी, इन्दिराजी, नरसिमारावजी और बाजपेयीजी जैसे विद्वान शासक पचास वर्षों में साम्प्रदायिकता, जातिवाद, भ्रष्टाचार, आतंकवाद का इलाज नहीं कर सकें । हमारे शासकों को शर्म भी नहीं आती यह कहते हुए कि इसमें विदेशी हाथ है । अगर विदेशी हाथ दंगे करवा रहें हैं, आतंकवाद फैला रहें हैं, तो बताइए कि आप के शाक्तिशाली हाथ क्या हुए ? क्या आपने भी उनके हाथो में अपने हाथ तो नहीं दे रखे हैं ? मुझे तो अब ऐसा ही लगने लगा है ।

दंगाग्रस्त इलाकों का अगर आप आंकलन करें तो आपकों मालूम होगा कि जहां-जहां अल्प संख्यक और दूसरे कमज़ोर तबके के लोग आर्थिक रूप से मज़बूत होने लगे वहां-वहां नियोजित ढंग से दंगे कराये गयें । भागलपुर, कोलकाता, बिहारशरीफ, गुजरात, मुरादाबाद, मेरठ, मुम्बई इत्यादि इलाकें इसकी सच्ची कहानी कह रहें है । इनके विरूद्ध ये फसाद इसलिए कराए जा रहे हैं ताकि ये आर्थिक रूप से कमज़ोर रहें । इनकी सभ्यता, संस्कृति और पहचान मिटा देना चाहते हैं वे लोग । सरकारी सम्पत्तियों को लूट-लूटकर शासक समाज के लोग व्यक्तिगत सम्पत्ति का अम्बार खड़ा कर रहे हैं और देश की अर्थव्यवस्था को कमजोर बना रहें हैं । अबतक कोई भी ऐसी सरकार नहीं बनी जो इसकी जाँच कर सके । इतनी कोशिशों के बावजूद भी मुसलमान, सिख, इसाई, दलित, पिछड़े नहीं मिटे भारत की इन सरज़मीन से और मेरे ख्याल में न कभी मिट सकते हैं । इसलिए शासक समाज के लोगों को ये कोशिश बंद करनी चाहिए । अयोध्या विवाद के कारण लाखों इन्सानों का खून बह चुका है, अरबो - खरबो की सम्पत्ति लूट चुकी है और हजारों-हजार के खून बहने की सम्भावना है । ऐसी मंदिर-मस्जिद से न रामजी खुश होगे और न खोदा व रसूल । मेरे ख्याल में नमाज़ पढ़ने वाले या रामजी का नाम लेने वाले

अगर बचेंगे ही नहीं तो फिर नमाज़ पढ़ने या पूजा करने आयोध्या जाऐगा कौन ? अयोध्या का सवाल आज भी हल हो सकता है अगर इसकी जिम्मेदारी आयोध्या के सिकुलर हिन्दु और सिकुलर मुसलमानों पर छोड़ दिया जाय । भारत का कोई राजनेता इसका हल नहीं चाहता क्योंकि सवाल कुर्सी का है । नेहरूजी के जमाने में यह विवाद शुरू हुआ । राजीवजी ने विवादित जगह का ताला खोलवाया और शिलान्यास कराया और नरसिमारावजी ने कल्याण सिंहजी के सहयोग से उक्त मस्जिद का विध्वंश कराया । साम्प्रदायिक तत्वों ने देश के सुप्रीम कोर्ट के आदेशों की धज्जियाँ उड़ा दी । भारतीय संविधान में केन्द्रीय सरकार को अधिकार है । अगर राव साहब चाहते तो सुप्रीम कोर्ट के आदेशों की धज्जियाँ नहीं उड़ती । सवाल एक मस्जिद टूटने का नहीं है बल्कि सवाल न्यायालय और कानून की मर्यादा का है । जहां कहीं भी दंगे होते हैं शासक समाज के लोग ज़्यादातर ज़ालिम समाज का साथ देते देखें गये हैं । उसकी ख़ास वजह यह है कि शासन और प्रशासन में अल्पसंख्यक, दलित और पीड़ित समाज के लोग न के बराबर है । जब तक शासन, प्रशासन और पुलिस फोर्स में मुस्लिम दलित तथा अन्य आहत-पीड़ित समाज के लोगों को उचित तादाद में भागीदारी नहीं दी जाती ये अन्याय, अत्याचार बंद नहीं हो सकते । बजरंग दल, विश्व हिन्दु परिषद जैसे हजारों संगठन इस देश में नफरत का विष फैला रहे है । ऐसे संगठन कानून और संविधान के विरुद्ध आचरण कर रहे हैं। ऐसे संगठनों को हमेशा के लिए बंद किया जाना चाहिए चाहे उन्हें जिस किसी धर्म मज़हब के माननेवाले क्यों न चला रहे हों क्योंकि ऐसे संगठन देश की एकता अखण्डता के लिए खतरा हैं । ''मुसलमानों को भी हजरत मोहम्मद स. अ. व. के महान उसूलो पर चलकर और मोहम्मदी मुसलमान बनकर इन्सानियत की ख़िदमत करनी चाहिए । यज़ीद और बनु उमैया के रास्ते पर चलकर न तो वे अपना भला कर सकते है और न देश और देशवासियों का'' हज़रत मोहम्मद स. अ. व. का मजहब यह सिखाता है कि हम सभी इंन्सानों से प्रेम मोहब्बत से पेश आयें । जुल्म, ज्यादती, नाइन्साफी, आतंकवाद का हज़रत मोहम्मद स. अ. व. के दीन में कोई स्थान नहीं है ।

रामराज का सपना देखने वाले रामभक्त हिन्दु समाज अगर मस्जिदों, गुरुद्वारों, गिरिजाघरो, मुसलमानों, सिखों, ईसाईयों, दलितों और कमजोर वर्गो की रक्षा नहीं कर सकते तो इसकी क्या गारन्टी है कि वे मन्दिरों की रक्षा कर सकेंगे और जो मुसलमान मन्दिरो, गिरिजाघरो, गुरुद्वारों और अपने पड़ोसी हिन्दु भाईयों की रक्षा नहीं कर सकते तो शायद वे अपनी मस्जिदों की भी रक्षा नहीं कर सकेंगे। अल्लाह, ईश्वर अगर हर जगह मौजूद है तो यक़ीन मानिए वह ज़ात मन्दिर, मस्जिद, गिरिजाघर और गुरुद्वारों में भी है, आपमें भी और मुझमें भी, कोई सिर्फ मन्दिर में, कोई सिर्फ मस्जिद में अगर अल्लाह, ईश्वर को देख रहा है तो यह देखने वाले का अज्ञान, भ्रम है, क्योंकि जो सभी जगह है, वह सिर्फ एक जगह नहीं हो सकता और जो सिर्फ एक जगह है वह सभी जगह कैसे हो सकता हैं ? दूसरी बात ये कि दंगा-फसाद करके कोई किसी को भारत की सरज़मीन से नहीं मिटा सकता, फिर धर्म और राजनिति के गलत ठीकेदारों के बहकावे में आकर हम अपने भाईयों, बहनों का खून क्यों बहाए ? ऐसा करने से न रामजी खुश होगें न खुदा व रसूल। मेरे ख्याल में अल्लाह, ईश्वर का असली घर इन्सान है और इसी के हित के लिए खोदा और ईश्वर के सारे घर बनाए गयें हैं।

सभी के लिए बस एक ही रास्ता सही है -

हिन्दु हों या मुसलमान, सिख हो या ईसाई, यहूदी हों या पारसी, सभी एक दूसरे को प्यार करना सीखे, एक दूसरे के मज़हब और धर्म-स्थल को आदर और सम्मान देना सीखें, न कि नफरत, अपमान और अनादर देना। इसी में हम सबों का हित भी है और देश का भी। ''वृक्ष के एक पत्ते को भ्रम हो सकता है कि अन्य पत्ते दूसरे है, एक डाली को भ्रम हो सकता है कि अन्य डालियाँ दूसरी हैं लेकिन सच्चाई यह हैं कि सभी एक ही वृक्ष के पत्ते और डालियाँ है और सबका जीवन-स्रोत भी एक है। इसलिए व्यक्तिगत धार्मिक विश्वासों, अविश्वासों को समाज और देश की तरक्की में बाधक न होने दें, यहीं प्रार्थना और आग्रह है आप सबों से चाहे आप किसी भी धर्म, मजहब के मानने वाले हमारे भाई बहन क्यों न हों। मेरे ख्याल में इन्सानियत से बड़ा न कोई धर्म है और न कोई मजहब।''

- मोहम्मद शौकत अली

बस एक ही रास्ता !

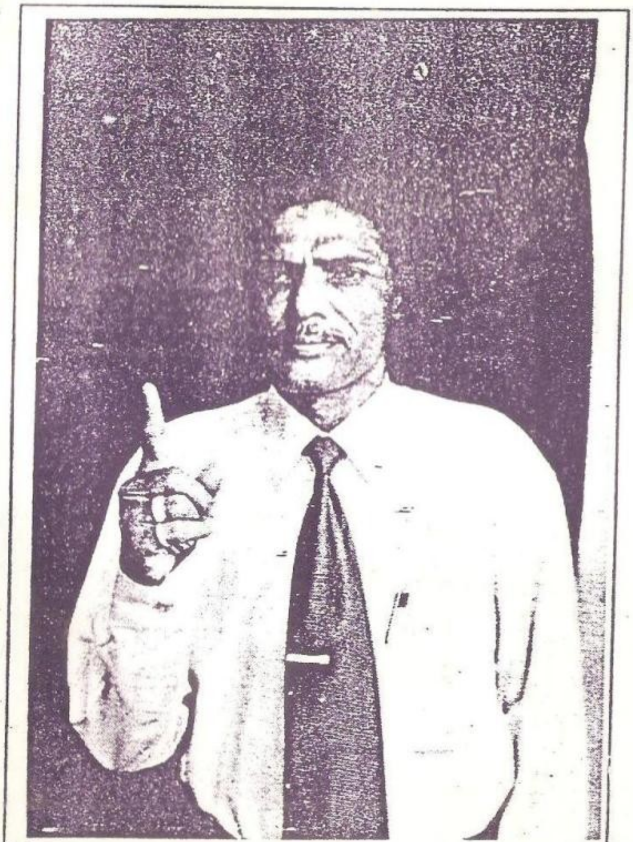

मोहम्मद शौकत अली

बस एक ही रास्ता !

अल्लाह ईश्वर अगर हर जगह मौजूद है तो यक़ीन मानिए कि वह ज़ात, मन्दिरो, मस्जिदों, गिरिजाघरों और गुरुद्वारों में भी हैं, आप में भी और मुझमें भी । कोई सिर्फ मस्जिद में, कोई सिर्फ मन्दिर में अगर उसे देख रहा है तो यह देखने वाले का भ्रम है, क्योंकि जो सभी जगह है वह सिर्फ एक जगह नहीं हो सकता है और जो सिर्फ एक जगह है वह सभी जगह कैसे हो सकता है।

\- मोहम्मद शौकत अली

লোকসেনা জিন্দাবাদ!
আলী শাহ জিন্দাবাদ!

মানুয়ারা খাতুন

সেক্রেটারী, লোকসেনা পার্টি

Mob.: 9038547937, 8100171317, 9674831640

আবেদন—দেশের ৫০০ (পাঁচশো) পুঁজিপতি গুষ্ঠি (শাসক সমাজ) দ্বারা পরিচালিত পার্ট্রিগুলি এবং তার চামচাদেরকে ভোট এবং টাকা দিয়ে, তার সরকার গঠন করে দেখে নিয়েছি। আমাদের গরিবী, বেকারী আরো বেড়ে গেছে। আমরা খেতে পারছি না। মেয়েরা বাড়িতে বসে আছে, বিয়ে দিতে পারছি না। বিনা চিকিৎসায় লোকজন মারা যাচ্ছেন। আমাদের শরিরে ভালো কাপড় নেই, মাথায় ভালো ছাত নেই। কাংগ্রেস, টি-এম-সি, বিজেপি সিপিএম, পার্টিগুলিকে ভোট দিয়ে দেখে নিয়েচি। এবার আমরা নিজের পার্টি লোকসেনা কে ভোট দিয়ে নিজেয় সরকার গঠন করবো। নিজের সমস্যগুলি নিজেই সমাধান করবো। এই জন্য আমরা গরীব মানুষ লোকসেনা পার্টি ত্যরী করেছি।

লোকসেনার সংগ্রাম

১) কাজের অধিকার কে মৌলিক অধিকার হিসাবে ঘোষনা করতে হবে। প্রতিটি বেকার মানুষকে কেন্দ্র এবং রাজ্য সরকার মিলে (৩০০০/-) তিন হাজার টাকা মাশিক পেনশন দিতে হবে এবং প্রতিটি (৬০) ষাট বছরের বৃদ্ধ মানুষকে (২,০০০) দুইহাজার টাকা সরকারী পেনশন দিতে হবে। বিধবাদের জন্য (২,০০০) দুইহাজার টাকা পেনসন দিতে হবে।

২) প্রতিটি মেয়ের নামে তার জন্মের এক মাসের ভিতরে কেন্দ্র ও রাজ্যসরকার মিলে (৫০,০০০/-) পঞ্চাশ হাজার টাকা ফিক্সড ডিপজিট্ করে দিতে হবে, জাতে তার বিয়ের সময়ে কোনো অসুবিধা না হয়।

৩) চাষ (কৃষি) কে উদ্যোগ হিসাবে ঘোষনা করতে হবে, যাতে চাষিরা নিজের উৎ পাদিত পন্যের দাম নিজেরাই ঠিক করতে পারে।

৪) এস সি, এস টি এবং ওবিসি জাতিগুলিকে যথাক্রম ২২.৫% এবং ২৭% সরকারি চাকরিতে নিযুক্ত করতে হবে।

৫) মুসলিম সমাজ এবং অন্য সংখ্যলঘু সমাজ কে সংসদ এবং বিধান সভাগুলিতে শাসন প্রশাসন এবং সরকারী চাকরিতে (৩০%) তিরিস শতাংশ সংরক্ষন দিতে হবে। নির্বাচনে কালো টাকা, গুন্ডা বাহিনী এবং পুলিশ বাহিনীর অপ্রয়োগ বন্ধ করতে হবে।

ভোট আমার রাজ তোমার চলবে না, চলবে না।
যার যত সংখ্যা ভারী তার তত ভাগিদারী
ভারতের গরিব মানুষ এক হও, এক হও।
জাত পাত ভেঙে সব মানুষ এক হও।

আপনাদের সাথী,
এম. এস. আলী শাহ
সভাপতি, লোকসেনা (পার্টি)

সন্ধ্যা ঢালী ট্রেজার : লোকসেনা দ্বারা পার্টি অফিস ৬৩/এইচ/৫ মদন মোহন বর্মন ষ্ট্রিট, কলকাতা - ১ থেকে প্রচারিত।

लोकसेना जिन्दाबाद!   अली शाह जिन्दाबाद!

जिन्दाबाद! जिन्दाबाद!   जिन्दाबाद! जिन्दाबाद!

आवेदन

Mob.: 9038547937, 8100171317, 9674831640

देश के पाँच सौ पुँजीपति परिवारों (शासक संमाज) द्वारा संचालित्त पार्टियों को वोट एवम् रुपये दे कर और उनकी सरकारें बनाकर हमलोग देख चुके हैं। हामारी गरीबी और बेकारी और ज्यादह बढ़ गयी। हमलोग खाने नही सक रहे हैं, वच्चो को अच्छे स्कूलो में पढ़ाने नही सक रहे है। शरीर पर न तो अच्छा कपडा है आर न रहने के लिए अच्छा घर। उन्होने गाँव-गाँव में अभीतक नतो पेयजल की व्यवस्था की है और न बिजलीकी। हमारी वेटियाँ घरोमे, वैठी हैं, उनकी शादी हम नहीं कर पा रहे हैं दुसरी तारफ शासक समाज एवम् पुँजीपति परिवारों की सम्पत्ति दिनो दिन बढ़ती गयी, उनकी सम्पत्ति पर कोई सीमाबन्धन नही है। उनपर से हमारा भरोसा उठ चुका है।

इसीलिए हमलोगो ने लोकसेना बनायी है ताकि अपनी सरकारें बनाकर अपनी समस्याओं का समाधान हमलोग खुद कर सकें।

<u>लोकसेनाका संग्राम –</u> १. काम के अधिकार कों मौलिक अधिकार घोषित करना होगा। प्रत्येक बेकार व्यक्ति को केन्द एवम् राज्य सरकार द्वारा ३०००/– (तीन हाजार रुपये) मासिक पेनशन देना होगा, एवम प्रत्येक ६० वर्ष के बुढ़े स्त्री पुरुष को २०००/– (दो मासिक हाजार रुपये) एवम् विधवा बहनोको २०००/– मासिक पेनशन देना होगा।

२. प्रत्येक कन्या के नाम से जन्म के एक माह के अन्दर केन्द्र एवम् राज्य सरकारों कों मिलकर ५०,०००/– (पचास हजार रुपये) फिक्स डिपोजिट करना होगा ताकि शादी के समय परेशानी न हो।

३. कृषि (खेतीं) को उद्धोग घोषित करना होगा ताकि किसान अपने उत्पादन का दाम खुद तय कर सकें।

४. एस. सी., एस टी एवम् ओ. बी. सी. समाज को सरकारी नौरियों मे क्रमशऋ २२/५% एवम् २७% नियुक्त करना होगा।

५. मुसलिम समाज एवम् अन्य अल्प संखक को संसद, विधानसभाओं, शासन प्रशासन एवम् सरकारी नौरियों में ३०% आरक्षण देना होगा।

५. चुनाव में कालाधन, गुण्डावाहिनी एवम् पुलिस तन्त्र का गलत उपयोग बन्द करना होगा।

वोट हमारा राज तुम्हारा
नही चलेगा नही चलेगा।
जिसकी जितनी संख्या भारी।
उसकी उतनी हिस्सादारी।
जात–पात तोड़ो सभी गरीब एक हो।

आपका साथी
एम. एस. आली शाह
अध्यक्ष
लोकसेना (पार्टी)

मनोआरा खातुन सचीव लोकसेना एवम् फैयसल आजमी, नसरुल्ला, सिद्धार्थ चटार्जी, रुपा दास, सन्ध्या ढाली

सन्धा ढाली ट्रेर्जार : लोकसेना द्वरा पार्टि अफिस ६३/एइच/५, मदन मोहन बर्मन स्ट्रिट, कल्काता - १ से प्रचारित।